Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JULY-AUGUST, 2020, VOL- 8/60

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का बी.पी.एल. परिवारों के आर्थिक जीवन पर प्रभाव : एक अध्ययन

सुशील कुमार मुन्ना, Ph. D.

पूर्व शोध–छात्र, व्यावहारिक अर्थशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Abstract

प्रस्तुत शोध–पत्र इंपीरिकल पद्धति पर आधारित है। इस शोध–पत्र में उ.प्र. सरकार द्वारा संचालित योजनाओं को बी.पी.एल. परिवार के आर्थिक जीवन पर प्रभाव को देखने का प्रयास किया गया है। इस शोध–पत्र के प्रमुख तथ्य यह दृष्टिगत करते हैं कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाएं बी.पी. एल. परिवारों को आर्थिक स्तर पर मजबूत किया है। आज इन योजनाओं के माध्यम से उनका बेहतर समाजीकरण हो रहा है। साथ ही बेगार जैसी प्रथा की वैचारिकी से भी वे बाहर निकल गये हैं। साहूकारों एवं अन्य आर्थिक समृद्धिशालियों के चंगुल से उनका जीवन बाहर आ रहा है।

प्रमुख शब्दावली : *बदहाली, बेरोजगारी, परम्परागत, बिखराव, गरीबी, उन्मूलन, अर्थव्यवस्था, साक्षात्कार, जर्जर, क्रान्ति, समुदाय, प्रशिक्षण, बेगार प्रथाएं, वैश्विक*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

परिचय एवं सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य

ग्रामीण जीवन की बदहाली एवं बेरोजगारी की स्थिति केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों द्वारा समय–समय पर अंकित किया जाता रहा है। यदि इस बदहाली एवं बेरोजगारी के पीछे के प्रमुख कारणों को दृष्टिगत किया जाये तो गरीबी एवं बेरोजगारी दो प्रमुख अवधारणा दृष्टिगोचर होती है। परम्परागत कार्यों के समाप्त होने के कारण एवं शहरी जीवन की वैचारिकी के आत्मसात करने के कारण जनसंख्या का एक बड़े भाग का आर्थिक स्तर गरीबी रेखा की तरफ अग्रसर हुआ है। यदि हम देखें तो भारत की प्रमुख समस्या पैतृक

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व्यवसाय जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था रूपी माला में गुथे हुए मणियों की भाँति थी एवं उसका आधार स्तम्भ खेती था, परन्तु इन परम्परागत धंधों में बिखराव के परिणामस्वरूप आज यह माला छिन्न–भिन्न हो चुकी है।

गरीबी की निम्नतर स्थिति के अनेक कारण हो सकते हैं। मुख्य कारण गाँवों के परम्परागत उद्योग–धन्धों में कमी होना भी है। परम्परागत उद्योग–धन्धे की यहां की एक बड़ी जनसंख्या का जीवनाधार था। जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सन्तुलित रूप प्रदान करने में सहयोग देते थे। गाँवों में उपलब्ध कराई जा रही सेवाओं में पारिवारिक व्यवसाय के रूप में हजारों वर्षों से कार्य हो रहा था। इसके अनेक लाभ भी थे। इसलिए आज भी नई पीढ़ी का सेवा व्यवसाय में कार्यरत रहना व्यवहारिक एवं लाभदायक है।

सरकार ने गरीबी उन्मूलन के लिए अन्य अनेक योजनाएँ संचालित की है। जैसे भारत में निर्माण स्वयं सेवक इसके द्वारा प्रत्येक वित्त वर्ष में कम से कम 100 दिनों का गारंटीयुक्त मजदूरी रोजगार प्रदान किया जाता है। बी.पी.एल. परिवारों को मूल आवास और वास भूमि उपलब्ध कराना। भूमि की खोई अथवा जर्जर उत्पादकता भी पुनप्राप्ति करना आदि रहा है। इसी प्रकार ग्रामीण विकास अध्येतावृत्ति योजना। सांसद आदर्श ग्राम योजना, प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना और सरकारी ग्रामीण विकास कार्यक्रम। इस योजना अन्तर्गत स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना, महिला समृद्धि योजना, ग्रामीण युवा स्वरोजगार कार्यक्रम, इन्दिरा आवास योजना, प्रधानमंत्री रोजगार योजना, सुनिश्चित रोजगार योजना आदि के द्वारा गरीबी उन्मूलन का प्रयास किया जा रहा है। वर्तमान भारत एवं ग्रामीण संरचना पूर्ववत नहीं रह गयी है। भारतीय अर्थव्यवस्था सुदृढ़ स्थिति इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था इसमें मुख्य भूमिका को सम्पादित कर रही है।

आज अधिकांश गाँव वर्तमान नवीन तकनिकियों से प्रभावित है और पैतृक सेवा व्यवसाय को नवीन रूप में अथवा नवीन सेवा व्यवसाय के परिणामस्वरूप अपनी आर्थिक समस्या को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। कौशल विकास प्रशिक्षण वर्तमान स्वचालित योजना का एक हिस्सा है जिसके परिणामस्वरूप अनेक सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी गाँव में प्रसारित की जा रही है। जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में बी.पी.ओ. क्रान्ति के

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कारण इस क्षेत्र में प्रत्येक वर्ष एक तिहाई से अधिक वृद्धि देखी जा सकती है। इन्हीं तथ्यों के परीक्षण हेतु चयनित उत्तरदाताओं से साक्षात्कार लिए गये। साक्षात्कार से प्राप्त तथ्यों को तथ्यगत विश्लेषण निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रस्तुत किया गया है%

संचालित योजनाएं एवं आर्थिक स्तर में बदलाव की स्थिति

भारत सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा संचालित योजनाएं इस प्रकार तैयार की जाती हैं कि उसका प्रत्यक्ष प्रभाव लाभान्वितों पर पड़े। आर्थिक परिप्रेक्ष्य में जो योजनाएं बनायी जाती हैं। भौतिक रूप से वह संसाधनों की पूर्ति करती है। अनेक सन्दर्भ में यह भी तथ्य दृष्टिगत होता है कि केवल व्यक्ति अपितु समुदाय की अवधारणा को प्रक्षेपित करती है। सरकार यह मानती है कि नियोजित परियोजनाएं व्यक्ति के जीवन स्तर में परिवर्तन करें। यही कारण है कि सरकार गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले जनमानस को उपकरणों के रूप में वृत्ति सहायता प्रदान करती है।

आर्थिक संदर्भ कहा जा सकता है कि भौतिक संसाधनों की उपभोग की स्थिति सदैव परिवर्तनशील रहती है। संसाधनों के प्राप्त के रूप में लाभान्वितों की स्थिति स्थिर अथवा निम्न होती है। अल्प विकसित देश तथा विकसित देश में अधिक जनसंख्या का जीवन स्तर निम्न होता है। सरकार केन्द्र तथा राज्य के माध्यम से विभिन्न योजनाओं को चलाकर के विकास की परिपाटी में पिछड़े लोगों में आय की वृद्धि मे ंविशेष महत्व देती है। परिणामस्वरूप उनके जीवन स्तर में परिवर्तन की स्थिति आती है। यह परिवर्तन भौतिक संसाधनों की उपलब्धि के पश्चात् उपभोग की स्थिति पर आधारित होता है। अध्ययन क्षेत्र में चयनित उत्तरदाताओं द्वारा उपयोग में लाये गये भौतिक संसाधनों के आधार पर अवधारणात्मक रूप में कहा जा सकता है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप बी.पी.एल. परिवारों में आर्थिक स्तर में बदलाव के रूप में आया है एवं आर्थिक निर्धनता कम हुई है। इन योजनाओं के माध्यम से बी.पी. एल. परिवार आर्थिक केन्द्र की तरफ बड़े स्तर पर अग्रसर हुए हैं।

विभिन्न योजनाएं एवं रोजगार के अवसर की उपलब्धता

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सरकार संचालित योजनाओं के माध्यम से व्यक्ति के आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ एवं मजबूत करती हैं और उसे सफल बनाने के लिए विभिन्न योजनाओं को प्रोत्साहित करती है। वस्तुतः यह सार्वजनिक कार्य न होकर व्यक्ति के रूचि और उसके उद्यमशीलता पर निर्भर करता है। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने के सन्दर्भ में सरकार यह मानती है कि ऐसे व्यक्ति के आर्थिक स्थिति कमजोर है जिससे वह सामान्य सामाजिक दशाओं से कठिनाईपूर्वक संलग्न हो पा रहे हैं। उनके आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए सरकार संचालित योजनाओं के द्वारा उनको उद्यमिता से सम्बन्धित करती है। ऐसा इसलिए करती है कि व्यक्ति रोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर होकर इस प्रकार से सक्रिय हो जाता है कि विकास की परिपाटी में न केवल स्वयं का विकास करता है, बल्कि समुदाय के विकास के लिए उन्मुख करता है। रोजगारपरक कार्यक्रम और इससे सम्बन्धी प्रशिक्षण सरकार अपने विशेष क्रियाशीलता में विकास की उपादेयता हेतु महत्व प्रदान करता है। प्रायः यह माना जाता है कि सरकार जिन कार्यक्रम को पात्र व्यक्तियों के निमित्त करती है। उसका लाभ प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उन व्यक्तियों को प्राप्त हो सके। यही कारण है कि सरकार गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों को विकल्प के रूप में रोजगार और ऋण की सुविधा अन्य लोगों की तुलना में सस्ते दर पर प्रदान करती है। इस तथ्य के परीक्षण के संदर्भ में उत्तरदाताओं से साक्षात्कार लिये गये। आर्थिक भागीदारी के संदर्भ में उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन करने वाले लोगों के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप रोजगार के बड़े अवसर उपलब्ध हुए हैं।

निर्धारित दर पर खाद्य सामग्री का वितरण

रोटी, कपड़ा एवं मकान को मनुष्य की मौलिक आवश्यकताओं के रूप में माना जा सकता है। इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति के आधार पर किसी राष्ट्र में निवासित व्यक्तियों की दशा का आर्थिक मूल्यांकन विकास के परिप्रेक्ष्य में किया जाता है। यही कारण है कि विकसित देश की तुलना में विकासशील देश को भोजन, वस्तु, आवास तथा स्वास्थ्य की दशाओं में संघर्ष करते हुए देखा जा सकता है। भारत जैसे विकासशील देश में जहां

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्राकृतिक संसाधनों पर ही भौतिक संसाधनों की निर्भरता पायी जाती है। भारत में जनसंख्या वृद्धि एवं आर्थिक संतुलन को नकारात्मक संदर्भ में क्रियान्वित योजनाओं पर प्रक्षेपित करता है। जनसंख्या वृद्धि और जनसंख्या घनत्व के असंतुलन में खाद्यान्न के सन्दर्भ में चुनौतियां प्रस्तुत की। सरकार अपने नैतिक दायित्व का पालन करते हुए अपने यहां निवासित व्यक्तियों को खाद्यान्न सम्बन्धी सुरक्षा और सुविधा प्रदान करते हेतु सस्ते गल्ले अन्य वितरण और अन्त्योदय नियोजन के अन्तर्गत जीवन यापन करने वाले व्यक्ति को विशेष रियायती दर पर भरण–पोषण हेतु खाद्यान्न की व्यवस्था उपलब्ध करती है। अन्त्योदन योजना के अंतर्गत वितरण की जाने वाली सूखी खाद्य सामग्री लोगों को कुपोषण और भूखमरी से निजात दिला रही है। आज उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बी.पी.एल. परिवारों को मामूली दर पर खाद्य सामग्री उपलब्ध करा रही है। यदि ऐसा नहीं होता तो शायद जनसंख्या का बड़ा भाग भूखमरी तरफ अग्रसर होता। इस संदर्भ में उत्तरदाताओं का मानना है कि उत्तर प्रदेश सरकारी द्वारा संचालित खाद्य योजनाएं जहां एक तरफ बी.पी. एल. परिवारों की उदरपूर्ति करने में समर्थ वहीं दूसरी बेगार एवं बंधुआ मजदूर व्यवस्था को समाप्त करने में सहायक हो रही है।

खाद्य सामग्री से मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति

आज भारत सरकार एवं राज्य सरकारें विभिन्न योजनाओं के माध्यम से गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले जनमानस को समाज के मुख्यधारा में लाने के लिए कटिबद्ध है। हम देखें तो उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाएं बी.पी.एल. परिवारों के लोगों के विकास और निर्माण पर सीधा प्रभाव डालती है। उनका मूल्यांकन विकास के सन्दर्भ में गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन करने वाले लोगों की आवश्यकताओं के प्रतिपूर्ति के आधार पर मूल्यांकित किया जाता है। आवश्यकता के संदर्भ में यह माना जाता है कि आर्थिक आवश्यकता प्रायः मनुष्य की बौद्धिक आवश्यकता की पूर्णता को दर्शाते हैं। खाद्य सामग्री के वितरण के साथ ही साथ सरकार द्वारा लाभ पहुंचाने वाली नीतियों और उसके विकास के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के द्वारा बी.पी.एल. परिवारों द्वारा मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जा रही है। आज

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सस्ते दर पर खाद्य सामग्री मिलने के कारण बी.पी.एल. परिवार अपने आय का अतिरिक्त हिस्सा अपने तथा बच्चों के शिक्षा एवं चिकित्सा खर्च करने में सक्षम दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इस संदर्भ में उत्तरदाताओं का मानना है कि सस्ते दर खाद्य सामग्री मिलने के कारण हमलोग अपने आय का शेष भाग अपने मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने पर खर्च कर पा रहे हैं। इस तथ्य से यह अवधारणा निर्मित होती है कि बी.पी.एल. परिवार हेतु उ.प्र. सरकार द्वारा संचालित योजनाएं उन्हें आर्थिक परिधि में ला रही है।

सरकारी योजनाएं एवं बेगार प्रथा

भारत ही नहीं वरन् वैश्विक पटल पर इतिहास में झांकने से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि बेगार प्रथा का प्रचलन काफी पुरातन रहा है। बेगार प्रथा के अन्तर्गत निर्धारित धनराशि पर कार्य करने के बावजूद भी सम्बन्धित व्यक्ति को धनराशि न प्रदान करना है। बेगार प्रथा पर काफी साहित्य एवं फिल्में उपलब्ध हैं जो बेगार प्रथा के बारे में बेहतर प्रदर्शन करती हैं। स्वतंत्रता के बाद देखें तो बेगार प्रथा को विभिन्न अधिनियमों के माध्यमों से पूर्णतः समाप्त कर दिया गया है लेकिन कुछ न कुछ इसकी घटनाएं देखने एवं सुनने को मिल रही हैं। अस्तु इसी तथ्य के परीक्षण हेतु उत्तरदाताओं से साक्षात्कार लिए गये। जिसमें उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि विभिन्न सरकारी योजनाएं बेगार प्रथा की समाप्ति में सहायक हुई है।

बीपीएल परिवारों हेतु संचालित योजनाएं एवं प्रवजन

प्रवजन वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति गांव से अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर आजीविका चलाने हेतु प्रस्थान करता है। दो दशक पहले हम देखें तो भारत में प्रवजन की स्थिति काफी तेज थी लेकिन इधर दो दशक में भारत सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप प्रवजन की स्थिति कमजोर पड़ी है। मनरेगा जैसी योजना बीपीएल परिवारों के लिए जीवनदायिनी हो रही है। अस्तु इसी तथ्य के परीक्षण हेतु उत्तरदाताओं से साक्षात्कार लिये गये कि क्या विभिन्न योजनाओं के संचालन होने से बीपीएल परिवारों के लोगा शहरों की तरफ कम प्रवास कर रहे हैं। उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा श्रम कार्य के रूप

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

में संचालित योजनाओं के परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की तरफ जाने में रूझान कम हुआ है।

योजनाओं के परिणामस्वरूप बी.पी.एल. परिवारों में संतुष्टि की स्थिति

व्यक्ति को आशाओं के अनुरूप उसके जीवन को गति मिलती है तो हम संतुष्टि के रूप में देखते हैं। इसी संदर्भ में उत्तरदाताओं से पूछा गया कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप उनके जीवन को संतुष्टि मिलती है। उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन करने वाले योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप आर्थिक स्तर पर गाँव में ही रहकर अपने को संतुष्ट महसूस किया है।

बी.पी.एल. परिवारों की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में योजनाओं की सहायता

एक सामाजिक प्राणी के लिए जीवन निर्वाह हेतु विभिन्न दैनिक आवश्यकताएं होती हैं जिसके द्वारा वह अपने जीवन को गति देता है। दैनिक आवश्यकताओं के पूर्ति में विभिन्न कारक उत्तरदायी होते हैं – जैसे व्यक्ति की मासिक आय, संबंधित परिवार, संबंधित रिश्तेदार आदि–आदि। लेकिन इधर कुछ दशकों में हम देखें तो बीपीएल परिवारों के दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति विभिन्न योजनाएं भी एक अभिकरण के रूप में सहायक हो रही हैं। इस संदर्भ में उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप बड़े स्तर पर दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक हुई हैं।

दैनिक योजनाएं एवं आधुनिक संसाधन के प्रयोग की स्थिति

आज मानव सभ्यता आधुनिकता ही नहीं, वरन् उत्तर आधुनिकता के मुहान पर खड़ी है। जहां व्यक्ति के परम्परागत साधनों की विकास यात्रा आधुनिक संसाधनों के पायदान तक पहुंच चुकी हैं। लेकिन एक तबका ऐसा भी है जो गरीबी के अभाव में आधुनिक संसाधनों का प्रयोग बड़े स्तर पर नहीं कर पा रहा है। लेकिन छोटे–मोटे संसाधनों का प्रयोग योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप कर पा रहा है। उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है पहले की अपेक्षा आज सरकार द्वारा बड़े स्तर पर आधुनिक संसाधनों का प्रयोग

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

किया गया है। यह सिक्के का एक पक्ष है, जबकि सिक्के का दूसरा पक्ष यह भी दृष्टिगोचर होता है कि बीपीएल परिवारों की एक बड़ी जनसंख्या आधुनिक संसाधनों के प्रयोग से कोसों दूर हैं।

विभिन्न योजनाएं एवं गरीबी रेखा का स्तर में बदलाव

सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक बदलाव से व्यक्ति के जीवन स्तर पर में भी बदलाव आता है। बीपीएल परिवारों हेतु उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं से गरीबी रेखा के स्तर में भी बदलाव आया है। अस्तु इसी संदर्भ में उत्तरदाताओं से पूछा गया है कि क्या उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं से गरीबी रेखा के स्तर में बदलाव आया है। इस संदर्भ में उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप गरीबी रेखा का स्तर कम नहीं हुआ है, बल्कि गरीबों के जीवन स्तर में सकारात्मक बदलाव जरूर आया है। इसका कारण है कि बिचौलियों ने सरकारी योजनाओं के पूर्ण विस्तार को प्रभावित किया है।

योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप बी. पी. एल. परिवारों की आय के स्रोत में वृद्धि

इस उपभोक्तावादी संस्कृति के अंतर्गत देखा जाय तो व्यक्ति के विभिन्न आय के स्रोत होते हैं। इन्हीं स्रोतों से वह दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। बीपीएल परिवारों हेतु उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा योजनाएं भी बीपीएल परिवारों के आय के स्रोत की वृद्धि में सहायक हो रही हैं। अस्तु इसी तथ्य के परीक्षण हेतु उत्तरदाताओं से पूछा गया है कि क्या उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप बीपीएल परिवारों के आय के स्रोत में वृद्धि हो रही है। उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आय के बड़े स्तर में वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत शोध–पत्र के निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि संचालित योजनाओं के परिणामस्वरूप बी.पी.एल. परिवारों के आर्थिक जीवन मे सकारात्मक बदलाव आया है। सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि गरीबी रेखा

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप रोजगार के अवसर बढ़े हैं। सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों को खाद्य सामग्री का वितरण निर्धारित दर पर किया जाता है। सर्वाधिक उत्तरदाताओं का कथन है कि विभिन्न सरकारी योजनाओं के बेगारी एवं कम मूल्य पर कार्य करने की परम्परा की समाप्ति में सहायक सिद्ध हुई है। संचालित योजनाओं के परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्र से नगर की ओर प्रवजन की स्थिति में कमी आयी है। अधिकांश उत्तरदाता स्वीकार करते हैं कि गरीबों हेतु संचालित योजनाओं के परिणामस्वरूप सामान्य जीवन से संतुष्ट हैं। अधिकांश उत्तरदाताओं का कथन है कि दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में योजनाएं सहायक सिद्ध हुई हैं। दैनिक योजनाएं आधुनिक संसाधनों के प्रयोग से सम्बद्ध तो है किन्तु आधिकारिक रूप से वंचित भी हैं। संचालित योजनाओं के परिणामस्वरूप मानव पूंजी से राष्ट्र सशक्त और सकारात्मक परिवर्तन की ओर समृद्ध हुआ है। आर्थिक योजनाओं के संचालन के परिणामस्वरूप गरीबी रेखा के स्तर में परिवर्तन को सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है। अधिंकाश उत्तरदाताओं ने यह माना है कि संचालित योजनाओं के लाभ के परिणामस्वरूप आय के स्रोत में वृद्धि हुई है। योजनाओं के सन्दर्भ में सर्वाधिक प्रभाव शिक्षा और आवास के संदर्भ में देखा जा सकता है। समाज कल्याण योजनाओं में लोग सर्वाधिक सामाजिक सुरक्षा योजना से लाभान्वित हो रहे हैं।

संदर्भ

सेन, अमर्त्य (2001) : भारतः विकास की दशाएँ, राजपाल एण्ड संस, नई दिल्ली

कुमार, लोकेश (2011) : ''ग्रामीण वी.पी.ओ. में रोजगार की सम्भावनाएँ'', पत्रिका कुरुक्षेत्र, प्रकाशक, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।

कुमार, जतिन (2011) : 'संचार क्रान्ति ने खोले गाँवों में रोजगार के द्वार' पत्रिका कुरुक्षेत्र, प्रकाशक, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली

सेंगर, आर.एस. एवं चौधरी, रेशु (2011) : ''बायो डीजल से बढ़ती रोजगार की सम्भावनाएँ'', पत्रिका कुरुक्षेत्र, प्रकाशक ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली

गौतम, नीरज कुमार (2011) : ''मछली पालन में रोजगार की सम्भावनाएँ'' पत्रिका कुरुक्षेत्र, प्रकाशक

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली

श्रीवास्तव, एस. एवं रवि (2005) : एन्ट्री पावरटी प्रोग्राम इन उत्तर प्रदेश इन इवेल्युशन रिपोर्ट आन द कमीशन रिसर्च प्रोजेक्ट इन इन्स्टीट्यूशन ऑफ ह्यूमन डवलपमेंट, आई.ए.एम.आर. विल्डींग, इन्द्रप्रस्थ स्ट्रेट, एम.जी. मार्ग, नई दिल्ली

सिन्हा, वी.सी. (2011) : आर्थिक समृद्धि और विकास, मयूर पेपर बॉक्स, नवीन सहाद्रा, नई दिल्ली

बजट 2017–2018 : योजना, सूचना भवन सी.जी.ओ. परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, मार्च 2017

Dreze, Jear and Khera Reetika : The BPL Census and a Possible Alternative, Economic and Political Weekly, Vol. 45, No. 9

Alkire, Sabina and Seth, Suman : Selecting a Targeting Method to Identify BPL Households in India, Social Indicators Research, Vol. 112, No. 2.

Srinivas, T.N. : Poverty Lines in India : Reflections after the Patna Conference, Economic and Political Weekly, Vol. 42, No. 41.

Vaidyanathan, A. : Poverty and Development Policy, Economic and Political Weekly, Vol. 36, No. 21.

Jayaraman, K. : Poverty in India : Policies and Programmes : A Comment, Economic and Political Weekly, Vol. 6, No. 40.

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies